International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-11-2021, Accepted: 15-12-2021, Published: 30-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 109-112

अथर्ववेदः विभिन्न ज्ञान विज्ञानों का विश्वकोश

अर्चना दिनेश परदेशी
एसोसिएट प्रोफेसर, नवगण महाविद्यालय परली वैजनाथ, बीड़, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
वास्तव में अध्यात्मिक विधाओं के साथ–साथ अनेक लौकिक विद्याएं भी इस वेट का वर्णन विषय बनी है। विद्वानों का मत है कि अथर्व निरुपित ज्ञान विज्ञान का यह भंडार इतना वैविध्य पूर्ण तथा प्रगाढ़ है कि उसकी विस्तृत व्याख्या तथा आलोचना सामान्य व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। जरुरी यह है कि इन विज्ञानों के विशेषज्ञ विद्वानों को अथर्वगत इनके संदर्भों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया जाए और इन मंत्रों में वर्णित तथा संदर्भित विधाओं की विशेषताओं को वे हमें बताएं। यह काम किसी एक विद्वान के द्वारा होना भी संभव नहीं है। उचित यह होगा कि अथर्ववेदांत अंतर्गत संकेतित ज्ञान – विज्ञानों के जानकार विशेषज्ञों का एक शोध पटल गठित किया जाए तथा उनके शोध कार्य के लिए सही सुविधाएं दी जाए।
इस प्रकार यहां अथर्व वेदांत अंतर्गत विभिन्न ज्ञान–विज्ञानपरक सूक्तों (मंत्रों) का स्वल्प परिचय देकर बताएंगे कि क्यों इस वेद को समस्त ज्ञान–विज्ञान का विश्वकोश कहना अनुचित नहीं है।

मूलशब्दः विभिन्न ज्ञान, विज्ञानों का विश्वकोश

प्रस्तावना
चारों वेद संहिताओं में संकलित मंत्रों की संकलन प्रक्रिया भिन्न है। ऋग्वेद के मंत्र अधिकांश में परमात्मा के वाचक विभिन्न देवताओं की स्थितियों में प्रस्तुत किए गए हैं। जबकि यजुर्वेद में विभिन्न यज्ञ यागादि कर्मकांड के बोधक तथा तत् तत् कर्म में विनियुक्त होने योग्य मंत्र प्रथम से लेकर ३६ वें अध्याय तक रखे गए हैं।
इस प्रकार भिन्न भिन्न यज्ञों तथा अन्य कर्मों के निरूपक मंत्र समूहों को प्रस्तुत करने के पश्चात ४० वे अध्याय में विशुद्ध अध्यात्म विज्ञान (आत्म–परमात्म तत्व) को वर्णित किया गया है। सामवेद में केवल उपासना परख मंत्रों को ही संकलित किया गया है। इनमें से अधिकांश मंत्र ऋग्वेद से आए हुए हैं । यहां विषय (उपासना)की दृष्टि से उन्हें एक संहिता बध्द किया गया है। अथर्ववेद का मंत्र क्रम भिन्न है। यहां विभिन्न कांडों में मानव के लिए उपयोगी विभिन्न विधाओं तथा ज्ञान विज्ञान के निरूपक मंत्र अलग–अलग सुक्तो में उल्लेखित हुए हैं। इन विद्याओं को सामान्यतया सूची बद्ध करना कठिन है तथापि कहा जा सकता है कि अध्यात्मिक विधाओं के साथ–साथ अनेक अलौकिक विधाएं ैमबनसंत बपमदबमे) भी इस वेद का वर्ण विषय बनी है । विद्वानों का मत है कि अथर्व निरूपित ज्ञान विज्ञान का यह भंडार इतना वैविध्य पूर्ण तथा प्रगाढ़ है कि उसकी विस्तृत व्याख्या तथा आलोचना सामान्य व्यक्ति के लिए संभव नहीं है ।जरूरी यह है कि इन विज्ञानों के विशेषज्ञ विद्वानों को अथर्व गत इन के संदर्भों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया जाए और इन मंत्रों में वर्णित तथा संदर्भित इन विधाओं की विशेषताओ को वह हमें बताएं। यह काम किसी एक विद्वान के द्वारा होना भी संभव नहीं है। उचित यह होगा कि अथर्व वेदांत अंतर्गत संकेतित ज्ञान विज्ञानों के जानकार विशेषज्ञों का एक शोध पटल गठित किया जाए तथा उनके शोध कार्य के लिए सभी सुविधाएं दी जाए तथापि दीर्घावधि में ही इस कार्य के संपन्न होने की आशा की जा सकती है यहां हम अथर्व वेदांत अंतर्गत विभिन्न ज्ञान–विज्ञान परक सुक्तो (मंत्रों)का स्वल्प परिचय देकर बताएंगे कि क्यों इस वेद को समस्त ज्ञान–विज्ञान का विश्वकोश कहना अनुचित नहीं है। सर्वप्रथम हम मानव शरीर संबंधी अथर्ववेद में वर्णित कुछ विषय की चर्चा करेंगे।

शरीर–सम्बन्धी विज्ञान
महाकवि कालिदास के शब्दों में हमारा शरीर धर्म की साधना का मूल है १ किंतु अन्यत्र उसे रोगों का खजाना (व्याधि मंदिर)भी कहा गया है। २ दोनों कथन अपने–अपने संदर्भों में सही है। अथर्ववेद में यत्र तत्र हमारे शरीर को रोगी तथा पीड़ित करने वाली व्याधियों का उल्लेख मिलता है। साथ ही विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों तथा रोग निवारण के उपायों की भी चर्चा यहां आई है हम संकेत मात्र से इन विषयों की संक्षिप्त विवेचना कर रहे हैं।

स्पर्श–चिकित्सा
रोगों से छुटकारा पाने की अनेक पद्धतियों का संसार में चलन है। विभिन्न औषधीयां, जड़ी बूटियां तथा अन्य पदार्थ औषधि निर्माण में प्रयुक्त होते हैं। रोग तो शरीर में उत्पन्न होता है। अतः यदि चिकित्सक या कोई अन्य पुरुष रोगी के रोग आक्रांत अंग का संस्पर्श करें, उसे सहलाएं तथा सहानुभूति पूर्वक उसे वार्तालाप करें तो पीड़ित व्यक्ति को निश्चय ही सांत्वना तथा सुख मिलता है। इसे स्पर्श चिकित्सा कहते हैं । सांप या बिच्छू जैसे विषैले जानवरों के काटने पर आरंभ में जो झाड़ा दिया जाता है वह भी एक प्रकार की हस्त चिकित्सा या स्पर्श चिकित्सा ही है। चौथे कांड के १३ वें सूक्त का निम्न छठा मंत्र इसी स्पर्श चिकित्सा का संकेत देता है

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः।
अयं में विश्वभेषजोयऽयं शिवाभिमर्शनः।।

यह मेरा बाया हाथ भाग्यवान है और दाहिना हाथ अधिक सौभाग्यशाली है। यहां मेरा हाथ सर्वरोगनाशक है तथा स्पर्श में सुख दायक है। इस प्रकार हस्त–स्पर्श तथा वाणी से रोगी के कष्ट को दूर करने या कम करने का प्रयास किया जाता है।

परामर्श–चिकित्सा
रोगी को स्वस्थ करने तथा उसके मन में दृढ़ उत्साह जगाने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें स्वस्थ होने की आशा का संचार

किया जाए ।चिकित्सक यह मानते हैं कि औषधियां तो रोग निवारण में कारगर होती ही है किंतु रोगी को हताशा तथा निराशा से बचाकर उसमें उत्साह तथा आशा का संचार किया जाना आवश्यक है। यही कारण है कि रोगी की शैया के समीप जाने वाले को यह हिदायत दी जाती है कि वे उसे शीघ्र स्वस्थ होने का संदेश दे तथा वहां निराशा का वातावरण हरगिज न बनने दें। पंचम कांड के तीसवें सूक्त का आठवां मंत्र रोगी को विश्वास दिलाता है कि तुम्हें भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, यह रोग मारक नहीं है–मा बिभेर्न मरिष्यसि जरदष्टिम क्रणोमित्वां। इस रोग से डर मत, तू मरेगा नहीं। मैं तुझे दीर्घायु (वृद्धावस्था) तक पहुंचाऊंगा। चिकित्सक के ऐसे ही उत्साह प्रद वाक्य रोगी को स्वस्थ बनाने में सहायक होते हैं। उत्साह प्रदायक वाक्यों का रोगी पर निश्चित असर होता है।

विष निवारण चिकित्सा

हम देखते हैं कि विष का किसी न किसी रूप में सेवन मनुष्य को रोगी बनाने अथवा उसे मृत्यु तक पहुंचाने का कारण बनता है।आज के चिकित्सा विज्ञान ने विभिन्न प्रकार की ऐसी औषधियों का आविष्कार किया है जो उसे विष के प्रभाव से मुक्त करती है विष निवारण के २ मंत्र छठे काण्ड के १२ वें सुक्त में आए हैं। इन मंत्रों के अंत की ' तेना ते वारये विषम 'की सुक्ति इसी तथ्य को पुष्ट करती है कि समुचित चिकित्सा के द्वारा विष के प्रभाव को निर्मूल किया जा सकता है।

विषम ज्वर का नाश

शरीर में भीषण दाह उत्पन्न करने वाला विषम ज्वर रोगी को जीर्ण बना देता है । छठे काण्ड का २० वा सुक्त इसी ज्वर रोगों को नष्ट करने की विधि बताता है। अग्नि के तुल्य दाह पैदा करने वाला यह भीषण ज्वर योग्य वैद्य की चिकित्सा से दूर किया जा सकता है। यहां द्वितीय मंत्र में चिकित्सक को रूद्र नाम से संबोधित किया गया है तथा उचित औषधि प्रयोग (नम औषधीभ्यरू) से रोग नाश को संभव माना गया है।

कर्णशूल, यक्ष्मा (तपेदिक), जूड़ी का बुखार, पीलिया, कफ (खांसी) आदि अनेक रोगों के कारण तथा निवारण की चर्चा नवे काण्ड के आठवें सूक्त में आई है। यक्ष्माणां सर्वेषां विषं त्वत् निरवोचं । इस टेक वाले मंत्र (१०, ११, १२) क्षय रोग से रोगी को मुक्त करने के बात कहते हैं। वस्तुतः इन मंत्रों पर विस्तृत शोध होनी आवश्यक है।

सर्पविष–नाश् की विद्या

दशम कांड का चौथा सूक्त सांपों के काटने का इलाज बताता है। सर्प विष की घातकता सर्वविदित है। २६ मंत्रों के इस सूक्त में इस विषय को विस्तार दिया गया है। चिकित्सक को चाहिए कि वह शरीर के अंग प्रत्यंग तक पहुंचे विष के प्रभाव को दूर करें, उसे ह्रदय तक न पहुंचने दे। ऐसी चेष्टा करें कि विष का प्रभाव धीरे–धीरे कम होता रहे और रोगी स्वस्थ हो जाए

अग्डादग्डात् प्रच्यावय ह्रदयं परिवर्जय।
अधा विषस्य यत् तेजो ऽवाचीनं तदेतु ते। १०।४।२५

इन सभी मंत्रों का विस्तृत विवेचन इस विषय को अधिक स्पष्ट कर सकता है।

औषधि विज्ञान

अथर्ववेद में रोग निवारक औषधियों का अनेकत्र वर्णन मिलता है। आठवें काण्ड का सप्तम सुक्त विभिन्न रोगों को नष्ट करने वाली विभिन्न औषधियों का वर्णन करता है। २८ मंत्र वाले इस सुक्त का देवता (वर्ण विषय) औषधि है। तिसरे मंत्र में स्पष्ट किया गया है कि दिव्य गुणों वाले जलों तथा औषधियों से हमने (चिकित्सक ने) रोगी के शरीर में व्याप्त राजरोग (यक्षमा) को नष्ट कर दिया है –

आपो अग्रं दिव्या औषधयः।
तास्ते यक्ष्ममेनस्यमग्डादनीनशन् ।।

सुक्त के छठे मंत्र में औषधियों को जीवन देने वाली (जीवला), नधारिषां (हानी न करने वाली), जीवंती (जीवन को बढ़ाने वाली), अरुंधति (रुकावट न डालने वाली) (स्वास्थ में अवरोध न पैदा कर ने वाली), मधुमति (मधुर रस युक्त)आदि विशेषण वाली बताया गया है।

विशिष्ट औषधियों के गुण तथा लक्षण आदि भी यत्र तत्र यहां वर्णित हुए हैं सप्तम कांड के ६५ वें सूक्त में अपामार्ग औषधि के लाभ बताए गए हैं।

वनस्पति विज्ञान

वनों, पर्वतों, नदियों के किनारों तथा प्रकृति के नैसर्गिक परिवेशो में ऐसी अनेक औषधियां उत्पन्न होती है, जिनका विधिवत प्रयोग शरीर रोगों का नाश करता है। अथर्ववेद में ऐसी अनेक औषधियों वनस्पतियों तथा जड़ी बूटियों का उल्लेख मिलता है जिनके प्रयोग से विभिन्न रोगों का नाश संभव है। १६ वे काण्ड के ३४ वे तथा ३५ सुक्त में जग्ड्ड औषधि, ३६ सुक्त में शतवार वनस्पति तथा और ३८ में गुग्गुल का उल्लेख है। कुष्ठ रोग के निवारण की चर्चा इसी काण्ड के ३६वें सुक्त में विस्तार से आई है ।इसी प्रकार रोगपैदा करने वाले सुक्ष्म क्रमियों (ठंबजमतपं) की भी इस वेद में चर्चा हुई है।

काम विज्ञान

चतुर्विध पुरुषार्थों की सिद्धि में जहां हमें शरीर का सहयोग अपेक्षित होता है, हमारा स्वस्थ मन भी इसमें उतना ही सहायक होता है । चतुर्विध पुरुषार्थ में धर्म के पश्चात अर्थ और काम का नाम आता है। यहां आए ' काम ' को व्यापक अर्थ में समझना चाहिए इसमें केवल यौन–भावना का पर्याय समझना उचित नहीं है। मनुष्य के ऐहलौकिक जीवन के लिए आवश्यक सभी साधन और पदार्थ ' काम ' संज्ञा में आते हैं। हमारे सभी लौकिक और भौतिक इच्छाएं धर्म पूर्वक पूरी हो यही ' काम ' की सिद्धि है । अथर्ववेद में ' काम ' को व्यापक अर्थ में साथ ही यौन – भावना के संकुचित अर्थ में भी प्रयुक्त किया गया है। कालांतर में वात्स्यायन ऋषि ने जिन सूत्रों की रचना की उसके मूल में अथर्ववेद उपदिष्ट इस विषय को प्रेरणा रूप में देखा जा सकता है।

१६ वे काण्ड का ५२ वां सुक्त काम देवता को समर्पित है। पांच मंत्रों के इस सूक्त में सृष्टि के आरंभ में काम की विद्यमानता बताई गई है तथा उसे मन का प्रथम बीज कहा है। मनुष्य की सर्वविध प्रवृत्तियों के मूल में ' काम ' (इच्छा) है, यही इस सुक्त का अभिप्राय है। साथ ही हमें यह भी जानना चाहिए कि दांपत्य जीवन के मूल में जो यौन आकर्षण होता है उसे भी अथर्ववेद में यथा प्रसंग स्पष्ट किया है। छठे काण्ड का ८वा सुक्त स्वच्छ एवं युवा दंपत्ति के परस्पर यौन आकर्षण को अत्यंत मनोज्ञ रूप में प्रस्तुत किया गया है –

यथा वृक्षं लिबुजा समन्तं परिषस्वजे।
एवा परि ष्वजस्व मां यथा कामिन्यसो यथा मन्नापगा असरू।।
६ ।८।१

जैसे वृक्ष तथा लता का आलिंगन होता है उसी प्रकार दांपत्य प्रेम

की कामना वाली नारी पुरुष से आलिंगन बद्ध होती है। उनमें भी वियोग नहीं होता। इस सुक्त के अन्य दो मंत्रों में अन्य प्रकार की उपमाएं देकर नर – नारी के यौन संबंधों की चर्चा की गई है । काम का एक अन्य नाम ' स्मर ' है । छठे काण्ड का१३० वे सूक्त का देवता स्मर (कामदेव) है। काम ज्वर का प्रकोप स्त्री पुरुष को उन्माद की स्थिति तक पहुंचा देता है, इस वास्तविकता को उल्लेखित पर इस मनरू स्थिति को नियंत्रण में रखना प्रशस्त माना गया है। यहां यौन आकर्षण की यथार्थता को नकारा नहीं गया है।

मनस्तत्व तथा प्राण–विज्ञान

तैत्तिरीयोपनिषद् में जहां पंचकोशों का वर्णन आता है ३ वहां स्थूल शरीर के कारणभूत अन्नमय कोश की चर्चा के उपरांत प्राणमय कोश तथा मनोमय कोश का उल्लेख हुआ है ।शरीर की सक्रियता तथा उसके श्वसन क्रिया का मूलाधार प्राण तत्व है। अथर्ववेद में प्राण के संयम की बात तो कहीं ही गई है, साथ ही समष्टि के प्राण रूप परमात्मा का भी सुंदर विवेचन हुआ है। यदि हम प्राणप्रिया को सशक्त बना ले तो संसार की कोई शक्ति हमें पराजित नहीं कर सकती। प्राणों का सशक्तिकरण प्राणायाम के द्वारा संभव है । यही कारण है कि योग दर्शन में प्राणायाम को पृथक योगाग्ङ के रूप में उल्लेखित किया है। ४ मनु का स्पष्ट कथन है कि ६ जिस प्रकार अग्नि के द्वारा स्वर्ण रजत आदि धातुओं के मैल (मल)को दूर किया जा सकता है उसी प्रकार प्राणायाम (प्राणों को संयम)करने से इंद्रियों के दोषों से मुक्ति पाई जा सकती है।"

परमात्मा ही प्राण है

इसी वेद में श प्राण श को जगत् के संचालक परमात्मा के रूप में ११ वें काण्ड के चौथे सूक्त में प्रस्तुत किया गया है ।यहां ' प्राण ' शब्द व्यष्टि और समष्टि के जीवनदाता परमात्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है। उस सर्वाधीश परमात्मा को प्राण रूप में स्मरण कर भक्त उसके प्रति अपना नमस्कार निवेदन करता है । आलोच्य सूक्त के अवशिष्ट मंत्रों में प्राण स्वरूप परमात्मा को समस्त भौतिक गतिविधियों का सूत्रधार बताया गया है। प्राण को परमात्मा का वाचक बताने वाले इन्हीं वेद – मंत्रों की पुष्टि वेदांत दर्शन के प्रणेता महर्षि बादरायण ने 'अतएव प्राणः। ' सूत्र की रचना की और ' प्राण ' को परमात्मा का वाचक (नाम) सिद्ध किया।

अथर्ववेद में मनोविज्ञान

' मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्ष्योः' की उक्ति को चरितार्थ करने वाला मानव मन संसार का आठवां आश्चर्य है । यजुर्वेद के शिवसंकल्प प्रकरण में मन की चित्र – विचित्र कार्य प्रवृत्तियों का रोचक वर्णन किया गया है। ४ समाज के अंतर्गत लोगों के मनों चित्तो तथा संकल्पों की एकता को अभीष्ट कहा गया है। ऋग्वेद में इन्हीं से मिलते जुलते मंत्रों को ' संज्ञान सूक्त ' के मंत्र कहा गया है।५ तो यहां अथर्ववेद का यह प्रकरण पति – पत्नी तथा परिजनों के बीच मानसिक तथा भावात्मक एकता को आवश्यक बताता है । गृहस्थ के सदस्यों में सौमनस्य तथा सौहार्द तभी संभव है जब वे न केवल बाह्य दृष्टि से, अपितु मानसिक दृष्टि से भी एक सूत्र में बंधे रहे। उनके चिंतन तथा मनन में एकता होनी अपेक्षित है।

अथर्ववेद प्रतिपादित राजधर्म या राज्यशास्त्र

राज्य के संचालन तथा प्रशासन व्यवस्था को सुचारू रीति से चलाने के लिए जब एक शासन संहिता की आवश्यकता पड़ी तो वेद ने यहां भी हमारा मार्गदर्शन किया अथर्ववेद में शासक तथा राज्य प्रशासन से संबंधित अनेक शब्द आते हैं जिनके मंत्रों से प्रेरणा तथा मार्गदर्शन लेकर हम अपनी राज्य प्रणाली को सर्वोत्तम तथा सर्वहितकारी बना सकते हैं चौथे कांड का आठवां सप्ताह राजधर्म आवश्यक है यह मंत्र समूह मुख्यतः राजसूया यज्ञ में भी नियुक्त किया जाता है सिहासन आ रोड होने के पश्चात राजपुरोहित का आशीर्वाद उसे प्राप्त होता है।

राज्य शासन में प्रजातांत्रिक पद्धति श्रेष्ठ है

वैदिक राज्यशास्त्र की एक विशेषता उसके द्वारा प्रजातंत्र प्रणाली को महत्व देना है । वह कहीं भी स्वच्छंदता, स्वेच्छाचारिता, एकतंत्र तथा तानाशाही को प्रश्रय नहीं देता। इसीलिए वेदांत अंतर्गत राजधर्म प्रतिपादक सुक्तो में नागरिकों द्वारा निर्वाचित सभाओं तथा समितियों की चर्चा आती है ।

'सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने'

अथर्ववेद के सातवें कांड के १२वें सूक्त के तीसरे तथा चौथे मंत्र में निर्वाचित सभापति (राजा) सभासदों का नियंत्रण कैसे करें तथा उन्हें अनुशासन बध्द कैसे रखें, यह बताया है।

युद्ध–विद्या (Military science)

अथर्ववेद में युद्ध संचालन के प्रसंग भी आए हैं । पंचम काण्ड का २० वें सूक्त का देवता युद्ध में बजाए जाने वाला श्दुन्दुभिश नामक बाजा है। ऊंचा घोष करने वाली यह दुन्दुभि वीरों के हृदय में साहस तथा पराक्रम का भाव जगाती है। जिसके फलस्वरूप वे वीर युद्ध में विजय प्राप्त करते हैं । छठे कांड का १२६ वां सूक्त भी दुंदुभी का बखान करता है। युद्ध के प्रयोग में आने वाले अस्त्र शस्त्रों का यूं तो विस्तृत वर्णन रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रंथों तथा नीति ग्रंथों में मिलता है। यहां अथर्ववेद में वज्र नामक एक अस्त्र का बहुदा उल्लेख मिलता है। छठे कांड के १३४ वें सुप्त का देवता वज्र है।

अथर्ववेद आंतरिक कुछ भौतिक विज्ञान

1. धातु विज्ञान

भूमि से निकलने वाली स्वर्णा – रजत, अयस्क आदि धातुओं का परिष्कार कर, पिघला कर तथा उनसे विभिन्न पदार्थों का निर्माण कर उनका वास्तविक उपयोग लिया जाता है । स्वर्ण आभूषण केवल शोभा की ही वृद्धि नहीं करते इनका मानव शरीर पर भी प्रभाव पड़ता है। स्वर्ण को आयु, बल,ओज तथा वर्चस का देने वाला बताया है । धातुओं से यह लाभ उनके यथा उचित उपयोग से प्राप्त किए जाते हैं।

2. मणि विज्ञान

धातुओं की भांति विभिन्न मणियों का धारण भी शरीर पर अनुकूल प्रभाव पैदा करता है 1१६ वें काण्ड का २८ वां सूक्त मणिओ के इन लाभों का संकेत करता है।

3. दर्भ की उपयोगिता

दर्भ एक विशेष प्रकार की घास होती है जिसे सामान्यतः दूब कहा जाता है। आयुर्वेद की दृष्टि से इसकी विशेष उपयोगिता है ।इसे अनेक औषधियों में प्रयुक्त किया जाता है। ३२ वे सूक्त के प्रथम मंत्र में दर्भ का प्रयोग आयु वृद्धि के लिए किया जाना बताया गया है । निश्चय ही इन मंत्रों में वर्णित दर्भ की उपयोगिता को प्रमाणित करने के लिए वनस्पति शास्त्रियों का उच्च स्तरीय शोध अपेक्षित है।

4. कृषि–कर्म (कृषि विज्ञान)

अथर्ववेद में कृषि विद्या का विस्तार से उल्लेख हुआ है। बुद्धिमान कृषक हलो को जोत कर कृषि कर्म में प्रवृत्त होते हैं।

5. गो पालन (पशुपालन) की विद्या

मनुष्यों का गृहोपयोगी पशुओं से संबंध आदिम काल से रहा है। अन्य पशुओं की अपेक्षा गाय जैसे सर्वाधिक लाभ देने वाली चौपाय के प्रति आर्य जाति की आरंभ से ही अनुरक्ति रही है।

ग्राम में पशुओं के अध्ययन के लिए पृथक पशु विज्ञान (वेटरनरी साइंस) की संरचना हुई है। वेदों में गाय की महत्ता, उसकी उपयोगिता तथा व्यक्ति तथा समष्टि के हित में उसके नियोजन को लेकर अनेक प्रसंग आए हैं।

6. अथर्ववेद में खगोल विज्ञान

सप्तम कांड के ८१ वे सूक्त का देवता सोमाकौं (सूर्य – चंद्रमा) है। छः मंत्रों के इस सूक्त में परमात्मा के नियम में सूर्य और चंद्रमा का आकाश में भ्रमण, शुक्ल पक्ष में चंद्रमा की एक–एक कला की वृद्धि, चंद्रमा की किरणों द्वारा शीतलता का प्रसार, सूर्य की किरणों द्वारा अन्न – वनस्पति आदि का पक्व होना आदि विषय वर्णित हुए हैं। यह सारा कथन खगोल शास्त्र के अनुसार है । १६ वें कांड का सप्तम सूक्त नक्षत्रों का उल्लेख करता है। कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा तथा मघा इन ८ नक्षत्रों का वर्णन १६७६२ में, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, तथा मूल इन नक्षत्रों का उल्लेख १६७६३ में हुआ है ।पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा (मंत्र में श्रविष्ठा) का नाम १६७६४ में आता है। शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, (वेद में प्रोस्ठपदा) रेवती, ऐश्वर्या,अश्विनी, भरणी १६७६५ इस प्रकार यह सभी नक्षत्र वेदप्रोक्त है ।इसी काण्ड का आठवां सूक्त भी नक्षत्र विद्या का वर्णन करता है।

7. काल विज्ञान

अथर्व के १६ वें कांड के ५३ व ५४ वें सूक्त कालसूक्त कहलाते हैं। इनका देवता 'काल' है । काल गणना का मुख्य आधार सूर्य है। सप्तर्षियों का विकरण करने वाला सूर्य एक तीव्रगामी अश्व के तुल्य है जो अत्यंत बलशाली तथा सामर्थ्य वाला है । हमारे मन, प्राण, नाम, सब काल में समाहित है । काल में सभी प्रजा आनंद प्राप्त करती है – कालेन सर्वा नन्दन्ति (१६६५३७)

आर्यों की काल गणना पूर्णतया वैज्ञानिक आधार लिए है। एक पल से लेकर ब्रह्मा के दिन तथा रात्रि तक काल के अनंत प्रवाह को व्याख्या करना, इसी प्रकार युगों तथा चतुरयुगियों की गणना यह सारे विषय पूर्वयुगीन ऋषियों की आर्ष प्रज्ञा से प्रसूत हुए हैं। अथर्ववेद के इन काल सूक्तों से अनेक दार्शनिक प्रश्नों का समाधान मिलता है।

संदर्भ

1. कुमारसंभव में शिव की उक्ति
2. शरीरं व्याधिमंदिरमं । कुमारसंभव
3. तैत्तिरीयोपनिषद ब्रम्हानंदवल्ली, प्रथमोअध्यायः।
4. अध्याय ३४।१–६ यज्जाग्रतो दूरमुदैति आदि ६ मंत्र
5. ऋग्वेद–१०।१ ६ १ चार मंत्रों का यह सूक्त संज्ञान सूक्त कहलाता है।